DR.PUNAM THAKUR, ASST. PROFESSOR

THE GRADUATE SCHOOL COLLEGE FOR WOMEN JAMSHEDPUR

B. Ed DEPARTMENT

SUBJECT :- PEDAGOGY OF SCHOOL SUBJECT SOCIAL SCIENCE

(HISTORY)

SEMESTER-II, PAPER-VII A

TOPIC- METHODS OF TEACHING HISTORY

SUB TOPIC- MEANING OF TEACHING METHOD AND STORY TELLING METHOD

Scanned with CamScanner

इतिहास-शिक्षण की विभिन्न विधियाँ
[VARIOUS METHODS OF TEACHING HISTORY]

"Correct history teaching means not only providing the pupil a background of historial knowledge, but also an in-sight into the meaning and significance of history and the ability to continue his studies for himself." —**T. S. Mehta**

विषय-प्रवेश
(INTRODUCTION)

शिक्षा में आधुनिक शिक्षण-शास्त्र (Methodology) की उत्पत्ति कॉमेनियस व रूसो के विचारों से मानी जाती है। रूसो स्वयं इस क्षेत्र में लॉक (Locke) तथा अन्य शिक्षाविदों के विचारों से प्रभावित हुआ था। 18वीं शताब्दी में रूसो ने शिक्षण में सुधार लाने के लिए विभिन्न विचार प्रदान किये। उसका विचार था—"प्रकृति के सृष्टा के यहाँ से प्रत्येक वस्तु अच्छी आती है, परन्तु मनुष्य के हाथों में आकर वह विकृत हो जाती है।" उसने यह प्रतिपादित किया कि 'प्रकृति', 'मनुष्य' तथा 'वस्तुएँ' महान् शिक्षक हैं। हमारा प्रकृति पर नियन्त्रण नहीं है। अतः हमें अन्य दो को शैक्षिक प्रक्रियाओं में महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान करना चाहिए। ऐसा करके हम शिक्षा को प्रकृति के अनुकूल बना सकते हैं।

रूसो के बाद पेस्टालॉजी (Pestalozzi) ने इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। उसने 1800 से 1825 तक अपने सिद्धान्तों एवं विचारों को व्यावहारिक रूप प्रदान किया। उसने बालक के स्वाभाविक विकास पर आधारित कर शैक्षिक प्रक्रिया को संगठित कार्यक्रम (Organised Routine) में परिवर्तित करने का प्रयास किया। उसके कार्यों ने आधुनिक शिक्षण-विधियों का सूत्रपात किया। उसके अनुयायियों ने उसके विचारों एवं कार्यों का प्रसार योरोप तथा अमेरिका तक किया।

आधुनिक शिक्षा दर्शन नवीन मनोविज्ञान तथा नवीन वैज्ञानिक प्रक्रियाओं पर आधारित है। यह दर्शन बालक को महत्त्व प्रदान करता है। साथ ही सीखने की

Scanned with CamScanner

प्रक्रिया को गतिशील या सक्रिय मानता है। यह बालक की वैयक्तिक तथा सामूहिक दोनों प्रकार की रुचियों को महत्त्व प्रदान करता है और शिक्षा को अनुभवों की पुनर्रचना तथा पुनर्गठन की सतत् प्रक्रिया के रूप में देखता है। यह शिक्षण को सीखने के निर्देशन (Guidance of Learning) के रूप में देखता है।

शिक्षण विधि का अर्थ (Meaning of Teaching Method)—परम्परागत रूप से जब हम शिक्षण-विधियों के विषय में बातचीत करते हैं तो हमारा अभिप्राय यह होता है कि शिक्षक क्या करता है। परन्तु आधुनिक युग में शिक्षण-विधियों के साथ जो पद (Term) प्रयुक्त किये जाते हैं, वे छात्रों की सीखने की क्रियाओं (Learning Activities) का वर्णन करते हैं; उदाहरणार्थ—वाद-विवाद विधि (Discussion Method), प्रयोगशाला विधि (Laboratory Method), आगमन विधि (Inductive Method), निगमन विधि (Deductive Method), योजना विधि (Project Method) आदि। सार यह है कि प्रत्येक पद इस बात की व्याख्या कर रहा है कि शिक्षक क्या करता है। परन्तु यथार्थ में शिक्षक केवल इन क्रियाओं को निर्देशित करता है। जब यह कहा जाता है कि शिक्षक आगमन-विधि का प्रयोग कर रहा है, तब इसका अभिप्राय यह है कि आगमन-विधि से शिक्षण कर रहा है, परन्तु ऐसा नहीं है। वह केवल छात्रों द्वारा संचालित आगमन प्रक्रिया का निर्देशन कर रहा है। आगमन केवल छात्रों की क्रिया है, न कि शिक्षक की। इस दृष्टि से **थट** व **गेरबेरिच** ने शिक्षण-विधि को इस प्रकार परिभाषित किया है—**"विधि प्रक्रियाओं की वह सुपरिभाषित संरचना है जिसमें परिस्थितियों की माँगों के अनुसार विभिन्न प्रविधियाँ तथा युक्तियाँ निहित होती हैं।"**

"A method is a well-defined pattern of procedures within which a variety of techniques and devices may appear as circumstances may require."

—Thut and Gerberich :

Foundations of Method for Secondary Schools, pp. 6-7.

इस दृष्टि से इन लेखकों ने प्रयोगशाला विधि, बिनेटका योजना, योजना विधि आदि को शिक्षण-विधियों के अन्तर्गत रखा है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि शिक्षण-विधि कार्य की वह सामान्य योजना है जिसका निर्धारण किसी विशेष शैक्षिक परिणाम या उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किया जाता है। अतः शिक्षण-विधि शैक्षिक उद्देश्यों से सम्बन्धित है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि शिक्षण-विधि वह मार्ग है जिसके द्वारा शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कार्य किया जाता है।

शिक्षण में विधि के साथ कुछ ऐसे पद भी प्रयुक्त किये जाते हैं। उदाहरणार्थ—व्याख्यान विधि (Lecture Method), प्रदर्शन विधि (Demonstration Method) तथा प्रश्न-विधि (Question Method)। ये पद इस बात की ओर संकेत देते हैं कि "शिक्षक क्या करता है। बताना या कहना (Telling), प्रश्न करना (Questioning), दिखाना (Showing), स्पष्ट करना (Explaining) तथा प्रदर्शन करना (Demons-

Scanned with CamScanner

trating), वस्तुतः युक्तियाँ (Devices) हैं।" इनके द्वारा शिक्षक छात्रों की सीखने की प्रक्रिया को अग्रसर करता है। अतः इनको शिक्षण-विधियों के रूप में नहीं माना जाना चाहिए। ये शिक्षण-विधि न होकर प्रविधियाँ (Techniques) हैं।

शिक्षण-विधि तथा प्रविधि में अन्तर (Difference between Method and Technique)—शिक्षण-विधि के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए हम विधि तथा प्रविधि के अन्तर को निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट कर रहे हैं—

विधि (Method)	प्रविधि (Technique)
1. विधि की एक सामान्य संरचना (Pattern) होती है।	1. प्रविधि की सामान्य संरचना विधि की संरचना पर निर्भर है।
2. विधि का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व होता है।	2. प्रविधि का स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं होता है वरन् यह विधि पर निर्भर होती है।

इतिहास-शिक्षण में प्रयुक्त होने वाली शिक्षण-विधियाँ
(METHODS USED IN HISTORY TEACHING)

इतिहास-शिक्षण की कोई एक विशेष विधि नहीं है। इसका शिक्षण विभिन्न ढंगों एवं साधनों के प्रयोग से किया जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि इतिहास एक ऐसा व्यापक विषय है, जिसमें विभिन्न विधियों एवं प्रविधियों तथा ढंगों का प्रयोग करना पड़ता है।

"Throughout this book, I have made suggestions on many different ways and means (of teaching history), but I have deliberately refrained from giving anyone priority of place, for there can be, I think on one method of teaching any subject, certainly not such subject as history, so wide and deep are its ramifications."

—**Miss Drumond,** Quoted by **K. D. Ghosh** : *Creative Teaching of History*, p. 57.

इस दृष्टि से इसमें निम्नलिखित विधियों को प्रयुक्त किया जा सकता है—

1. कथात्मक विधि
(STORY-TELLING METHOD)

कथात्मक विधि में कहानी कहना, बातचीत करना, भाषण देना आदि का समावेश होता है, क्योंकि इन सब में वाणी का उपयोग करना पड़ता है। छोटी कक्षाओं में कहानी कहना ही इतिहास सिखाने की सर्वोत्तम विधि है। प्लेटो (Plato) ने भी इस विधि को छोटे बालकों के लिए लाभप्रद एवं उपयुक्त बताया था। बालक स्वभावतः कहानी-प्रिय होते हैं। कल्पना की उड़ान में उनकी बहुत-सी नैसर्गिक प्रवृत्तियों का विकास होता है। मानव बाल्यावस्था तथा वृद्धावस्था—दोनों ही में कहानी सुनने तथा

Scanned with CamScanner

कहने में रुचि प्रदर्शित करता है। कुछ मनुष्यों में कहानी कहने की कला जन्मजात होती है और कुछ व्यक्ति प्रयत्न करके सीख लेते हैं। इतिहास के शिक्षक को इस कला का जानना आवश्यक है। यदि उसमें यह कला स्वाभाविक रूप से नहीं है तो उसे प्रयत्न करके अर्जित करना चाहिए। यदि यह ऐसा नहीं करेगा तो वह सफल शिक्षक नहीं हो सकता तथा अपने छात्रों के साथ पूर्ण न्याय नहीं करेगा। इस प्रकार इस विधि की सफलता शिक्षक के निम्नलिखित गुणों पर निर्भर है–

(1) शिक्षक जिस कहानी को अपने छात्रों को सुनाना चाहता है, उसकी पाठ्य-वस्तु पर उसका पूर्ण अधिकार हो।

(2) कथावाचक निजत्व की भावना से ग्रसित नहीं होना चाहिए। उसको छात्रों में घुल-मिल जाना चाहिए, तभी वह कहानी कहने में सफलता प्राप्त कर सकता है।

(3) शिक्षक को कहानी की पाठ्य-वस्तु में रुचि लेनी चाहिए। यदि वह ऐसा नहीं करेगा तो वह अपने छात्रों की रुचि को विषय के प्रति उत्पन्न करने में असफल रहेगा।

(4) कहानी कहने का ढंग रुचिकर, स्वाभाविक तथा भावपूर्ण होना चाहिए, अर्थात् उसमें कृत्रिमता नहीं आनी चाहिए।

(5) शिक्षक को अभिनय-कला का भी ज्ञान होना आवश्यक है जिससे वह भावानुसार अपने हाव-भाव प्रदर्शित करने में सफल हो सके। इसके साथ ही उसमें स्वर का भावों के अनुसार उतार-चढ़ाव करने की सामर्थ्य भी होनी चाहिए। यदि उसमें यह शक्ति नहीं होगी तो वह कहानी को सफलतापूर्वक प्रस्तुत नहीं कर सकेगा और न सीखने हेतु उपयुक्त वातावरण ही निर्मित कर सकेगा।

(6) कहानी बालकों के मानसिक स्तर, रुचि एवं अवस्था के अनुकूल होनी चाहिए। यदि छोटी कक्षा के छात्र हैं तो उनके लिए ऐसी कहानियों का चयन किया जाय, जिनके द्वारा उनकी कल्पना एवं कौतूहल प्रवृत्ति को सन्तुष्ट किया जा सके। यदि छात्र 12 वर्ष की अवस्था के हैं तो उनको क्रियाशील पात्रों की कहानियाँ सुनानी चाहिए क्योंकि इस अवस्था का बालक उपयोगिता एवं सक्रियता में रुचि रखता है।

(7) शिक्षक को ऐतिहासिक कहानियाँ कालक्रम के अनुसार सुनानी चाहिए तथा छात्रों को जो कहानियाँ सुनाई जायें, वे जीवन-गाथाओं के रूप में हों।

(8) शिक्षक को कहानी सुनाने में छात्रों की सहायता लेनी चाहिए। उनको सतर्क तथा सक्रिय बनाये रखने तथा अपनी विषय-वस्तु को बोधगम्य बनाने के लिए प्रश्नों तथा सहायक सामग्री का भी उपयोग करते रहना चाहिए। श्यामपट पर कहानी की प्रमुख बातों, स्थलों तथा तिथियों को भी लिखते चलना चाहिए, जिससे छात्र बाद में उनका उपयोग कर सकें।

Scanned with CamScanner

(9) कहानी की भाषा छात्रों के स्तर के अनुसार होनी चाहिए, जिससे वे उसको समझने में समर्थ हो सकें तथा उनका ध्यान उसमें लगा रह सके।

(10) शिक्षक को ऐतिहासिक महापुरुषों के प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए।

कथात्मक विधि के गुण (Merits of Story-telling Method)

(1) इसके द्वारा बालकों में इतिहास के प्रति रुचि उत्पन्न की जा सकती है।

(2) इससे बालकों की कल्पना-शक्ति का विकास होता है। इसके लिए अध्यापक बालकों को पहले रूपरेखा दे सकता है और इस रूपरेखा को बालकों से पूर्ण करवा सकता है। बालक इसको पूर्ण करने में अपनी कल्पना-शक्ति का प्रयोग करेंगे।

(3) इस विधि से बालक अपने गुप्त भावों को व्यक्त करने का अवसर प्राप्त करते हैं। बालकों को विभिन्न पात्रों के कथन दोहराने के लिए कहा जा सकता है, जिससे उनकी झिझक तथा लज्जाशील प्रवृत्ति समाप्त हो सकती है।

(4) कहानी द्वारा उनकी जिज्ञासा को तृप्त करके उन्हें अनुशासित किया जा सकता है।

(5) जारविस (Jarvis) का विचार है कि इससे बालकों में नैतिक गुणों का विकास होता है क्योंकि वे नैतिक पुरुषों की कहानियाँ पढ़ते एवं सुनते हैं, अतः उनके कार्यों का स्वतः ही बालकों पर प्रभाव पड़ता है। इस अवस्था में उनमें अनुकरण करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। अतः वे अपना चरित्र उनके अनुसार बनाने का प्रयत्न करते हैं।

Scanned with CamScanner